بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **29.12.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

क़ादियान में जलसे में सम्मिलित लोग दुआओं पर बड़ा ध्यान दें तथा इस जलसे में उपस्थिति को अपने भीतर एक क्रान्ति लाने वाली बनाएँ

मुसलमानों की हिदायत के लिए दुआ करें, सामान्य रूप से विश्व के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला समस्त मुसलमानों को बुद्धि दे तथा वे विनाश के गढ़े में गिरने से बच जाएँ

अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत की आँखें खोले तथा ये अल्लाह तआला के भेजे हुए के विरोध से रुक कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहायक एवं सहयोगी बनने वाले हों।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज अल्लाह तआला की कृपा से क़ादियान का जलसा सालाना शुरु हो चुका है। अल्लाह तआला से दुआ करें कि जलसे के तीन दिन वहाँ कुशल पूर्वक व्यतीत हों तथा जिस उद्देश्य को लेकर जमाअत के निष्ठावान लोग इस जलसे में आए हैं वे अपना लक्ष्य प्राप्त करने वाले हों तथा वह उद्देश्य है अल्लाह तआला के समक्ष दुआएँ करना, अपने कर्मों की स्थिति को सुन्दर बनाने का प्रयास करना और अपनी ज़ात तक ही दुआओं को सीमित नहीं रखना अपितु जमाअत की प्रगति के लिए विशेष रूप से दुआएँ करना। जमाअत के विरोधी जो जमाअत को हानि पहुंचाने के लिए विश्व के किसी भी भाग में जो योजनाएँ बना रहे हैं उनके तोड़ के लिए अल्लाह तआला की विशेष सहायता, समर्थन एवं सहयोग के लिए दुआएँ करना। अल्लाह तआला उनके प्रत्येक षड्यन्त्र से हमें सुरक्षित रखे। इसी प्रकार मुसलमानों की साधारण स्थिति तथा अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर कुछ समुदाय तथा शासन जो हरकतें कर रहे हैं, जो अत्याचार कर रहे हैं और मुसलमान मुसलमान की जिस प्रकार गर्दन मार रहा है, जिस प्रकार विध्वंस एवं रक्तपात उनका हो रहा है, उनके लिए भी दुआ करना आज हमारा कर्त्तव्य है क्यूँकि अल्लाह तआला और हमारे आक़ा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नाम पर आपत्तियाँ की जा रही हैं तथा इन बातों से भी हम अहमदियों के दिल ही दुखते हैं अतः इसके लिए भी दुआएँ करनी चाहिएँ। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस उद्देश्य के लिए भेजे गए थे, उसके लिए भी दुआ करें तथा वह उद्देश्य है मुसलमानों की हिदायत तथा ग़ैर मुसलमों को भी इस्लाम के यथार्थ से अवगत कराना तथा उन पर इस्लाम की श्रेष्टता साबित करके उन्हें इस्लाम की गोद में लेकर आना, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे लेकर आना, तौहीद पर उनको स्थापित करना। इसी प्रकार सामान्य रूप से दुनिया के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला सारे इंसानों को बुद्धि प्रदान करे तथा वे विनाश के गढ़े में गिरने से बच जाएँ। आज दुनिया को मसीह मौऊद के मानने वालों की

दुआओं की बड़ी आवश्यकता है।

अल्लाह तआला दुनिया को बुद्धि प्रदान करे, मुस्लिम उम्मत को बुद्धि दे तथा ये लोग इस यथार्थ को समझें कि अल्लाह तआला के भेजे हुए दूत को मानने के बिना उनका कोई अस्तित्व नहीं है न ही उनकी मुक्ति है और नए साल में जब ये दाख़िल हों तो इस बात को समझते हुए दाख़िल हों, अल्लाह करे कि इनको अक़्ल आ जाए। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- दुआ के विषय में मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण पेश करुंगा।

दुआओं की क़बूलियत के लिए एक मूल और नियम वाली बात बयान फ़रमाते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

जब तक सीना (मन) साफ़ न हो दुआ क़बूल नहीं होती। यदि किसी सांसारिक मामले में एक व्यक्ति के लिए भी तेरे सीने में द्वेष है तो तेरी दुआ क़बूल नहीं हो सकती तथा सांसारिक मामले के कारण कभी किसी के साथ द्वेष नहीं रखना चाहिए और दुनिया और उसके संसाधन क्या मूल्य रखते हैं कि इनके कारण तुम किसी से दुश्मनी करो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः दुआओं की क़बूलियत के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि सारी व्यक्तिगत दुश्मनियों तथा द्वेषों को भुला दिया जाए और अल्लाह तआला के समक्ष गिड़गिड़ाते हुए अपने पापों की क्षमा भी मांगी जाए तथा आगे के लिए अपने दिल को पाक व साफ़ रखने के लिए भी अल्लाह तआला से सहायता मांगी जाए। आज जो अहमदियत के विरोधी अपने विरोध में बढ़े हुए हैं, हमें एक होकर अल्लाह तआला के समक्ष अपनी दुआओं के साथ उपस्थित होना चाहिए। जब इंसान व्याकुल होकर, बेचैन बनकर अल्लाह तआला के आगे झुकता है, उससे मांगता है तो फिर अल्लाह तआला भी उसकी सहायता के लिए आता है। अतः इस मूल बात को सदैव अपने सामने रखना चाहिए तथा कभी इस बात से विमुख नहीं होना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

याद रखो ख़ुदा तआला बड़ा निःस्वार्थ है, जब तक अधिकता से और बार बार व्याकुल होकर दुआ नहीं की जाती वह ध्यान नहीं देता। देखो किसी की पत्नि अथवा बच्चा बीमार हो या किसी पर भारी अभियोग आ जावे तो इन बातों के कारण वह कितना व्याकुल होता है। हर प्रकार की व्याकुलता की स्थिति में अल्लाह तआला की ज़ात ही है जो काम आती है, वही है जो दुआओं को सुनता है तथा अपने बन्दों की सहायता करता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः क़ादियान वालों से मैं सम्बोधित हूँ कि आजकल विशेष आध्यात्मिक वातावरण में, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बस्ती में रह रहे हैं, वहाँ कुछ दिन व्यतीत कर रहे हैं, अपनी नमाज़ों, अपने नफ़्लों में एक ऐसी दशा पैदा करने का प्रयास करें जो व्याकुलता की दशा है तथा सामान्य रूप से पूरी जमाअत को इस ओर ध्यान देना चाहिए। इधर उधर की बातों के बजाए अधिक समय दुआओं तथा अल्लाह की स्तुति में व्यतीत करना चाहिए। व्याकुल हो होकर अल्लाह तआला की ओर झुकें ताकि अहमदियों के लिए जहाँ भी परिस्थितयाँ प्रतिकूल हैं अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से इनमें सरलता प्रदान करे तथा दुश्मन को असफल एवं नामुराद करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जो ख़ुदा तआला के समक्ष रोता और गिड़गिड़ाता है तथा उसकी सीमाओं और आदेशों को महत्ता देता है वह ख़ुदा की कृपा से अवश्य अंश प्राप्त करेगा। इस लिए हमारी जमाअत को चाहिए कि वे तहज्जुद की नमाज़ को अनिवार्य कर लें, जो अधिक नहीं तो दो ही रक्अत पढ़ ले क्यूँकि उसको दुआ करने का अवसर अवश्य मिल जाएगा। उस समय की दुआओं में एक विशेष प्रभाव होता है क्यूँकि वे सच्चे दर्द और जोश के कारण निकलती हैं। जब तक विशेष व्याकुलता दिल में न हो उस समय तक एक व्यक्ति सुन्दर सपने से कब जाग सकता है। अतः उस समय का उठना ही एक दर्द-ए-दिल पैदा कर देता है परन्तु यदि उठने में सुस्ती और मूर्छता से काम लेता है तो स्पष्ट है कि वह दर्द और व्याकुलता दिल में नहीं क्यूँकि नींद तो दुःख को दूर कर देती है किन्तु जबकि नींद से जागता है तो ज्ञात हुआ कि कोई दर्द और दुःख नींद से भी बढ़कर है जो जगा रहा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- फिर एक और बात भी आवश्यक है जो हमारी जमाअत को धारण

करनी चाहिए और वह यह है कि ज़बान को व्यर्थ की बातों से बचाना चाहिए। ज़बान अस्तित्व की चौखट है तथा ज़बान को पाक करने से, मानो ख़ुदा तआला का अस्तित्व उसकी चौखट पर आ जाता है। जब ख़ुदा चौखट में आ गया तो फिर भीतर आने में क्या सन्देह है। आप फ़रमाते हैं- फिर याद रखो कि अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों में जान बूझकर मूर्छता न की जावे जो इन बातों को सम्मुख रखते हुए दुआओं से काम लेगा, हम विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला उस पर अपनी कृपा करेगा और वह बच जाएगा।

फिर आप फ़रमाते हैं कि पाप एक विष है जो इंसान को नष्ट कर देता है तथा ख़ुदा के प्रकोप को भड़का देता है। पाप से केवल ख़ुदा तआला का भय और उसका प्रेम हटाता है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि दुआ के क्रम को न तोड़ो तथा तौबा और इस्तिग़फ़ार से काम लो। वही दुआ लाभकारी होती है जबकि दिल ख़ुदा के आगे पिघल जावे तथा ख़ुदा के अतिरिक्त कोई शरण नज़र न आवे। जो ख़ुदा तआला की ओर भागता है तथा व्याकुलता के साथ शांति का इच्छुक होता है वह अन्ततः बच जाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- इंसान को चाहिए कि कोई कठिनाई आने से पहले भी दुआ करता रहे क्यूँकि उसे क्या पता कि ख़ुदा तआला के क्या इरादे हैं और कल क्या होने वाला है। अतः पहले से दुआ करो ताकि बचाए जाओ। आप अलै. फ़रमाते हैं कि कभी कभी कठिनाई इस रूप में आती है कि इंसान दुआ का समय ही नहीं पाता, अतः यदि पहले से दुआ कर रखी हो तो आड़े समय पर काम आती है।

फिर यह बात बयान करते हुए कि क़ुर्आन-ए-करीम जो है उसका आरम्भ भी दुआ है तथा उसका अन्त भी दुआ पर है आप फ़रमाते हैं- याद रखो कि ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन-ए-मजीद का आरम्भ भी दुआ से किया है तथा उसका अन्त भी दुआ पर ही किया है। सूरः फ़ातिहः भी दुआ है और सूरः अन्नास भी दुआ है। इसका यह अर्थ है कि इंसान ऐसा दुर्बल है कि ख़ुदा की कृपा के बिना पवित्र हो ही नहीं सकता और जब तक ख़ुदा तआला की कृपा प्राप्त नहीं होती तब तक दुनिया के मोह का भार गले का हार रहता है तथा वही इससे वंचित हो पाते हैं जिन पर ख़ुदा अपनी कृपा करता है किन्तु याद रखना चाहिए कि ख़ुदा की कृपा भी दुआ से ही आरम्भ होती है, इसके लिए भी दुआ ही करनी पड़ेगी।

फिर दुआओं की क़बूलियत के लिए यह भी आवश्यक है कि इंसान प्रतिदिन नेकियों में प्रगति करे। ख़ुदा तआला की सहायता उन्हीं को मिलती है जो सदैव नेकी में आगे ही आगे क़दम रखते हैं, एक स्थान पर नहीं ठहर जाते और वही हैं जिनका अन्त शुभ होता है। कुछ लोगों को हमने देखा है कि उनमें बड़ी रूचि, ध्यान और व्याकुलता होती है परन्तु आगे चलकर बिल्कुल ठहर जाते हैं अन्ततः उनका अन्त शुभ नहीं होता। आप अलै. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में यह दुआ सिखलाई है कि أَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي अर्थात- मेरे बीवी बच्चों का भी सुधार कर दे। अपनी स्थिति का पवित्र बदलाव तथा दुआओं के साथ साथ अपनी संतान और पत्नि के लिए भी दुआ करते रहना चाहिए, क्यूँकि अधिकांश परीक्षा संतान के कारण इंसान पर आ जाती है तथा अधिकांशतः पत्नि के कारण, उनके सुधार के लिए भी पूरा ध्यान होना चाहिए तथा उनके लिए भी दुआएँ करते रहना चाहिए। आप अलै. फ़रमाते हैं कि हमारी ओर से तो यही उपदेश है कि अपने आपको उत्तम तथा नेक नमूना बनाने के प्रयास में लगे रहो। जब तक फ़रिश्तों के जैसा जीवन न बन जावे तब तक कैसे कहा जा सकता है कि कोई शुद्ध हो गया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मुबारक वे बन्दी जो दुआ करते हैं और थकते नहीं क्यूँकि एक दिन रिहाई पाएँगे। मुबारक वे अन्धे जो दुआओं में सुस्त नहीं होते क्यूँकि एक दिन देखने लग जाएँगे। मुबारक वे जो क़बरों में पड़े हुए दुआओं के साथ ख़ुदा की मदद चाहते हैं क्यूँकि एक दिन क़बरों से बाहर निकाले जाएँगे।

फिर आप अलै. हमें ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं-

मुबारक तुम जबकि दुआ करने में कभी मांद नहीं होते, कभी थकते नहीं, सुस्ती नहीं दिखाते और तुम्हारी रूह दुआ के लिए पिघलती और तुम्हारी आँख आँसू बहाती और तुम्हारे सीने में एक आग पैदा कर देती है और तुम्हें एकांत का आनन्द उठाने के लिए अन्धेरी कोठरियों तथा सुनसान जंगलों में ले जाती है और तुम्हें व्याकुल और दीवाना और पागल बना

देती है क्यूँकि अन्ततः तुम पर कृपा की जाएगी। वह ख़ुदा जिसकी ओर हम बुलाते हैं बड़ा दयालु एवं कृपालु है तथा लाज

वाला सच्चा वफ़दार और व्याकुल लोगों पर दया करने वाला है। अतः तुम भी आज्ञापालक बन जाओ तथा पूरे सत्य और आज्ञा पालन के साथ दुआ करो कि वह तुम पर दया करेगा। दुनिया के शोर एवं व्यर्थ की बातों से अलग हो जाओ और व्यक्तिगत झगड़ों को दीन का रंग मत दो। ख़ुदा के लिए भार को उठा लो तथा हार को स्वीकार कर लो, ताकि बड़ी बड़ी विजय के तुम उत्तराधिकारी बन जाओ। दुआ करने वालों को ख़ुदा चमत्कार दिखाएगा और मांगने वालों को एक दिव्य वरदान दिया जाएगा। दुआ ख़ुदा से आती है तथा ख़ुदा की ओर ही जाती है। दुआ के द्वारा ख़ुदा ऐसा निकट हो जाता है जैसा कि तुम्हारी आत्मा तुम्हारे निकट है। दुआ की पहली नेमत यह है कि इंसान में पवित्र बदलाव पैदा होता है।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- अतः जो हथ्यार अल्लाह तआला ने दीन की उन्नति का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिया वही आपके मानने वालों को भी प्रयोग करना होगा। यही हथ्यार है जो हमें इन्शाअल्लाह तआला कठिनाईयों से भी निकालेगा तथा दुश्मन को भी नाकाम व असफल करेगा। अतः इस ओर प्रत्येक अहमदी को ध्यान देने की आवश्यकता है। अन्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ जो आप अलै. ने उम्मत-ए-मुस्लिमा के लिए की है, पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं-

ऐ मेरे रब्ब, मेरी क़ौम के बारे में मेरी दुआ और मेरे भाईयों के बारे में मेरी विनती सुन। मैं तेरे ख़ातमुन्नबिय्यीन और पापियों के शुभ चिन्तक, जिनकी सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी, के लिए तुझसे विनती करता हूँ। ऐ मेरे रब्ब, उन्हें अन्धकारों से अपने प्रकाश की ओर निकाल ले। ऐ मेरे रब्ब, उन पर दया कर जो मुझ पर धिक्कार करते हैं और जो मेरे हाथ काटते हैं। इस क़ौम को विनाश से बचा तथा अपने मार्ग दर्शन को इनके दिलों में प्रविष्ट फ़रमा तथा इनके पापों और बुरे कर्मों को क्षमा फ़रमा तथा इनको माफ़ कर दे तथा इनको भलाई अता कर और इनका सुधार कर दे और इनको शुद्धि प्रदान कर और इनको ऐसी आँखें अता फ़रमा जिनसे ये देख सकें और ऐसे कान अता फ़रमा जिनसे ये सुन सकें और ऐसे दिल अता फ़रमा जिनसे ये समझ सकें और नूर अता फ़रमा जिसके द्वारा ये समझ सकें, इन पर दया कर तथा जो कुछ ये कहते हैं उसको क्षमा कर दे क्यूँकि यह ऐसी क़ौम है जो जानती नहीं। ऐ मेरे रब्ब, हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके उच्च स्तर के सदक़े (क़ुर्बान) और उनके सदक़े (क़ुर्बान) जो रातों को इबादत में खड़े रहते हैं तथा सवेरे में जंग करते हैं और उन सवारियों के सदक़े (क़ुर्बान) जो रातों को तेज़ दौड़ती हैं और उन यात्राओं के सदक़े जो बस्तियों की माँ (मक्का) की ओर की जाती हैं। हमारे और हमारे भाईयों के बीच सन्धि के सामान फ़रमा और उनकी आँखें खोल और उनके दिलों को प्रकाशमान फ़रमा और उन्हें वह कुछ समझा दे जो तू ने मुझे समझाया है और इनको तक़्वा के मार्ग सिखा और जो कुछ बीत चुका उसको क्षमा कर दे। हमारी अन्तिम दुआ यही है, कि समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह तआला के लिए हैं जो ऊँचे आसमानों का रब्ब है।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत की आँखें खोले तथा ये अल्लाह तआला के भेजे हुए के विरोध से रुक कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहायक एवं सहयोगी बनने वाले हों। अल्लाह तआला हमें भी दुआओं का हक़ अदा करने वाला बनाए, विशेष रूप से क़ादियान में जलसे में सम्मिलित लोग दुआओं पर बड़ा ध्यान दें तथा इस जलसे में उपस्थिति को अपने भीतर एक क्रान्ति लाने वाली बनाएँ। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

TOLL FREE NO: 180030102131